दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/18(JS)–HL-**HL1**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Dilkhush Meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 1 / 18/08/18

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]: 1 1 3 0 3 7 9

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Dilkhush

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) प्रारंभिक खड़ी बोली और खुसरो की कविता

खड़ी बोली अपने आरंभ काल में स्वतंत्र रूप में न मिलकर मिश्रित रूप में मिलती है। खड़ी बोली का सर्वप्रथम विवरण खुसरो के 'खालिकबारी' में पं. दामोदर कृत 'उक्ति-व्यक्ति प्रकरण' में मिलता है।

अमीर खुसरो ने अपने मुकरियों, पहेलियों तथा कविताओं में खड़ी बोली का ऐसा प्रयोग किया जैसे कि उस समय ही खड़ी बोली प्रतिष्ठित अवस्था में थी।

आ० शुक्ल ने भी कहा " अमीर खुसरो के काव्य में खड़ी बोली देखकर ऐसा लगता है कि खड़ी बोली ने उस समय ही प्रौढ़ता का रूप धारण कर लिया हो।"

उनकी प्रसिद्ध कविता -

~~सबके सिर~~ "एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे।"

इन पंक्तियों को देखकर तो लगता है अमीर खुसरो मध्यकाल के नहीं आधुनिक काल के कवि हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनकी अन्य कविताओं में मिश्रित रूप ब्रज भाषा, अवधी व फारसी के साथ खड़ी बोली का स्वरूप मिलता है।

"काहे को बियाहे, सुन बाबुल मोरे,
भैया को दीहे महला-दुमहला,
हमे दीहो परदेश, सुन बाबुल मोरे।"

में ब्रजभाषा के साथ खड़ी बोली की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

अतः स्पष्ट है कि खड़ी बोली ने अपने विकास की नींव खुसरो के समय से ही डाल दी थी जिसको भारतेन्दु युग, व द्विवेदी युग में परिपक्वता मिली।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'भोजपुरी' बोली का परिचय

पूर्वी हिन्दी उपभाषा की बोलियों के समूह में 'भोजपुरी' बोली का महत्वपूर्ण स्थान है। यह बिहार के मुजफ्फरनगर, पूर्णिया आदि जिलों में बोली जाती है। इतना ही इसके प्रयोक्ताओं की संख्या फिजी, टोबैगो व त्रिनिदाद, व मॉरिशस जैसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी फैली हुई है। इसका विकास अर्धमागधी अपभ्रंश से हुआ।

ध्वनिगत विशेषताएँ

व का ब → वन > बन
ड़ का र → सड़क > सरक

व्याकरणिक विशेषताएँ

एकवचन से बहुवचन में इन, अन, प्रत्यय को जोड़ना – ठकुराइन, लड़कन
क्रिया का 'त' रूप भूत, 'ल' रूप वर्तमान तथा 'ब' रूप भविष्यकाल में, करत, पढ़ल, खाएब आदि।
कारकीय व्यवस्था में हम, हमारा तोहार, तुम्हार आदि परसर्गों का प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भोजपुरी के ज्यादातर शब्द देशज व तद्भवीकरण प्रक्रिया से बने हैं।

साथ में क्रिया के तीन रूप मिलना इसकी प्रमुख विशेषता है, जैसे लड़िका, लड़िकवा, लरकौना.

भोजपुरी का क्षेत्र राँची से लेते हुए बिहार के ज्यादातर क्षेत्र में फैला हुआ है इनमें पर्याप्त साहित्यलेखन भी मिलता है।

यही कारण है कि आठवीं अनुसूची में राष्ट्रभाषा की माँग वाली सूची में भोजपुरी ऊपर के स्थानों पर है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हिंदी भाषा का क्षेत्र

~~हिंदी~~ भाषा का क्षेत्र, इसमें समाहित बोलियों के स्थान पर काफी विस्तृत, लगभग दस राज्यों में फैला हुआ है। दिल्ली, मेरठ के क्षेत्र से खड़ी बोली / देहलवी का प्रादुर्भाव हुआ व धीरे-धीरे राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, व पंजाब आदि शामिल है।

अगर प्रयोक्ताओं की संख्यादृष्टि से देखें तो बयालीस प्रतिशत इसे पहली भाषा के रूप में तथा 30% दूसरी भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं।

इतना ही नहीं फिजी, मॉरिशस, नेपाल, त्रिनिदाद व टोबैगो आदि देशों में भी यह बोली-समझे जाने वाली भाषा है।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्य सम्पर्क भाषा के रूप में गौरान्वित होते हुए, भारतेंदु व द्विवेदी युग के अन्तर्गत

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा ने गद्य व पद्य दोनों पर अपना एकाधिकार कर लिया।

इसके कार्यक्षेत्र की बात करें तो यह भारत की राजभाषा, राष्ट्रभाषा व संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित है।

अतः विश्व हिन्दी सम्मेलन, साहित्य सम्मेलनों, नागरी प्रचारिणी सभा, आदि के प्रयासों ने न केवल हिन्दी भाषा के क्षेत्र का विस्तार किया है बल्कि इसमें साहित्य लेखन (वतनी (देवकीनन्दन खत्री का 'चंद्रकांता' व गुप्त जी की 'भारत-भारती' ने दक्षिण भारत के लोगों को हिन्दी सीखने को मजबूर किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) सिद्ध साहित्य में प्रारंभिक खड़ी बोली का स्वरूप

सिद्ध साहित्य, बौद्ध परंपरा से ही उपजी एक विचारधारा है जिसमें सिद्धों ने मोक्ष की प्रवृत्तिधारा पर बल दिया। सिद्धों ~~की संख्या~~ में प्रमुख सरहपा, कण्हपा हुए जिन्होंने धार्मिक प्रचार के लिए साहित्य-लेखन किया लेकिन उसमें प्रारंभिक खड़ी बोली का स्वरूप, अवहट्ट व अपभ्रंश के साथ नजर आता है।

"पंडिउ सअल सत्त वक्खाणअ
देहहि बुद्ध बसन्त न जाणअ।"

इसमें प्रारम्भिक खड़ी बोली जैसे 'ण' का प्रयोग व ~~व्याकरणिक~~ विभक्तियों का प्रयोग आदि।

"जिन्हि मण पवण न संचरइ, रवि ससि णाह पवेस
तहिं बुढ चित्त बिसाम करु, सरहे कहिउ उवेस।"

अतः सिद्धों ने 'संध्या-भाषा' के प्रयोग करते हुए विभिन्न संगों के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भाषाओं पर जोर दिया और इसमें आरंभिक हिन्दी की नींव साफ दिखाई देती है।

इसी साहित्य की पृष्ठभूमि पर, नाथ साहित्य, संत साहित्य का विकास हुआ जिसने ~~इसी~~ इन्हीं तत्वों का प्रयोग कर अपनी बोली को स्वतंत्र पहचान दी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा अपभ्रंश, अवहट्ट से होते हुए पुरानी हिन्दी तक पहुँची, लेकिन मध्यकाल में अवधी भाषा, के अंतिम समय से ब्रजभाषा ने साहित्य पर अपना एकाधिकार कर लिया था। इसका मुख्य कारण ब्रजभाषा में निहित कलात्मक शक्तियों की उपस्थिति।

'सूरदास' ने ब्रज भाषा के विकास को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया। इसमें निहित गंभीर कलात्मकता के कारण –

(क) कठोर खड़ी बोली व मर्यादापूर्ण अवधी के बीच की भाषा,

(ख) ~~कोमल~~, भावनात्मक, संप्रेषणीय व ~~लोक~~ लोकप्रचलित

(ग) शृंगार व वात्सल्य रसों की आवश्यकता को पूरी करने वाली भाषा।

(घ) ~~~~ भक्ति आंदोलन व मुगल शासक, राजपूतों के प्रश्रय ने ब्रज भाषा की कलात्मकता को उभारा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(4) सरल व्याकरणिक संरचना व शब्दों की सामासिक प्रवृत्ति के कारण बनावा।

(5) 'अष्टछाप' की स्थापना से ब्रज भाषा को बल मिला व नये-नये प्रयोग हुए जिससे कलात्मकता में गहराई की अनुभूति हुई।

~~कबिर~~
अमीर खुसरो की कविता -

"खुसरो रैन प्रेम की, जागी पी के संग
तन मेरो मन पीऊ को, दोऊ भए एक संग,"

"मेरो मोसे सिंगार करावत, आगे बैठ मान बढ़ावत
वासे चिक्कन कोऊ न दीसा, क्या सखि? साजन, ना सखि दीसा।"

इन कविताओं में ब्रज भाषा की आरंभिक अवस्था में ही कोमलता व प्रेम-माधुर्य गुणों का प्रभावपूर्ण प्रयोग दिखता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इनके अलावा पद्माकर, रैदास, मीराबाई आदि ने भक्तिकाल में ब्रज भाषा को अपनाया।

आ॰ शुक्ल के अनुसार सूरदास की भाषा में सरसता, श्रृंगार व वात्सल्य, वाग्विदग्धता आदि ब्रज भाषा के कलात्मक गुणों का समावेश था। अतः इन्हीं कारणों ने ब्रज भाषा के विकास को प्रोत्साहित किया।

"पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे,
मैं तो अपने नारायण की हो गयी दासी रे,
लोग कहे मीरा भई बावरी, न्यात कहे कुलनासी रे।"

इन पंक्तियों में मीराबाई द्वारा अभिव्यक्त भक्ति भाव को कृष्ण से मिलन की चाह दिखायी गयी है।

इतना ही नहीं, रीतिकाल में श्रृंगार पर आधारित काव्य रचा गया जिसके लिए ब्रज भाषा से उपयुक्त कोई और भाषा न थी। बिहारी,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भिखारीदास आदि ने ब्रजभाषा के प्रयोग व क्षेत्र को बताया -

"ब्रजभाषा हेतु ब्रजबास ही न अनुमानौ,
ऐसे ऐसे कविन की बानी है सो जानिए।"

और ब्रजभाषा में स्थात क्रियाओं का प्रयोग भी संभव किया है- बिहारीलाल ने,

"कहत, नटत, रिझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे भौन में करत है, नैनन ही सों बात।"

अतः काव्यभाषा में पद्य पर तो ब्रजभाषा का एकाधिकार सा था। यहाँ तक कि भारतेन्दु ने भी कहा " खड़ी बोली में कविता करना कठिन है, पद्य की भाषा के लिए तो ब्रज ही उत्तम है।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'खड़ी बोली' बोली की भाषिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली का विकास अपभ्रंश, अवहट्ठ, पुरानी हिन्दी आदि प्रक्रिया से गुजरते हुए हुआ। अतः इसकी भाषिक विशेषताओं में समन्वय का भाव मिलता है जिसमे लगभग सभी भाषाओं की ध्वनियों, शब्दों, आदि व्याकरणिक संरचनाओं का सम्मेलन किया हुआ है।

इसकी भाषिक विशेषताओं में ध्वनिगत विशेषताएँ, शब्दगत विशेषताएँ आदि शामिल की जाती है, तथा व्याकरणिक विशेषता भी गौणतः सम्मिलित की जाती है।

ध्वनिगत विशेषताओं में 'ऐ' व 'औ' का प्रयोग का विकास इसमे हुआ तथा 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग 'पानी > पाणी' बहुतायत में मिलता है।

शब्दों के द्वित्वीकरण के साथ क्षतिपूरक दीर्घीकरण का प्रयोग भी इसमें मिलता है, जैसे कम्म > काम, अज्ज > आज इत्यादि।

स्वरभक्ति व व्यंजन स्वरलोप का प्रयोग भी खड़ी बोली में अधिक हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खड़ी बोली का विकास क्षेत्र दिल्ली के आस-पास का क्षेत्र रहा अतः इसमें ओज गुण की प्रधानता दिखाई देती है।

इसके अलावा खड़ी बोली में अभिधात्मक, लक्षणार्थ व व्यंग्यार्थ तीनों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जा सकता है।

इसकी व्याकरणिक संरचना संस्कृत के ढाँचे पर टिकी हुई लेकिन कई महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं। जैसे कारकीय अवस्था में विभक्तियों की जगह परसर्गों का प्रयोग, इत्यादि।

शब्दावली के तौर पर खड़ी बोली में तद्भवीकरण की प्रक्रिया व सरलीकरण पर जोर दिया ~~गया~~ जिसके कारण ज्यादातर शब्द तद्भव, देशज व विदेशज तत्सम भी मिलते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अमीर खुसरो की कविता से शुरुआत हुई, खड़ी बोली का स्वरूप दिखाई पड़ता है.
"एक थाल मोती से भरा, सबके सिर औंधा धरा,"

इसके पश्चात उपनिवेशकाल के दौरान, अंग्रेजों ने भारतीय भाषा में सम्पर्क भाषा के तौर पर खड़ी बोली को ही उपयुक्त समझा।

भारतेन्दुकाल में भाषायी द्वैत समाप्त हो गया था और गद्य में खड़ी बोली तथा पद्य में ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया। लेकिन द्विवेदीयुगीन परिस्थितियों में श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह खत्री आदि के नेतृत्व में खड़ी बोली को पद्य के साहित्य लेखन के लिए आधार बनाया तथा 'भारत-भारती' जैसी रचनाओं ने इसका विकास किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) अपभ्रंश के अध्ययन के प्रमुख स्रोतों का उल्लेख करते हुए अपभ्रंश के प्रमुख भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

अपभ्रंश के अध्ययन मुख्यत: 'भ्रष्ट भाषा' से अर्थ समझा जाता है जिसका विकास प्राकृत के टूटने-फूटने व अन्य भाषाओं के मिश्रण से हुआ।

इसके अध्ययन का मुख्य स्रोत हस्तलिखित ग्रंथ, शिलालेख आदि के अलावा जैन ग्रंथ 'णायकुमार चरिउ' व 'पउम चरिउ' हेमचंद्र व स्वयंभू द्वारा लिखे गये ग्रंथ माने जाते हैं।

यह उकारान्त भाषा है तथा 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग मिलता है। शब्दों का द्वित्वीकरण तथा स्वरलोप की उपस्थिति भी मिलती है। अद्य > अज्ज

इसके अलावा अपभ्रंश में कारक व्यवस्था में सम्बन्ध 'के साथ 'का' परसर्ग का प्रयोग व 'हिं' विभक्ति महत्वपूर्ण हैं माने जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश के मुख्य भेद - आदिकालीन अपभ्रंश व पूर्वमध्यकालीन अपभ्रंश माने जाते हैं जिसमें नागरी अपभ्रंश, उपनागरी अपभ्रंश तथा राजस्थानी अपभ्रंश (रासो काव्यों) प्रमुख है।

नागरी अपभ्रंश का सम्बन्ध, नगरों में प्रचलित शिष्ट-भाषा से है जिसका प्रयोग जैन काव्यों व रासो काव्यों में अधिक हुआ है। युद्धों का वर्णन व चरित्र-लेखन की परंपरा इसी अपभ्रंश में मिलती है।

"भला हुआ जु मारिया, बहिणि म्हारो कंतु, लज्जेजंतु वयंसिअहु, जइ भग्गा घरु एंतु।"

अपभ्रंश के स्वरूप को प्रदर्शित करने वाली ये पंक्तियाँ रासो काव्यों से उद्धृत हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) 'दक्खिनी हिंदी' के प्रयोग-क्षेत्र बतलाते हुए 'दक्खिनी हिंदी' की भाषागत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दक्खिनी हिंदी' का विकास में राजनीतिक परिस्थितियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। 13वीं शताब्दी के अंत में औरंगजेब का दक्षिण अभियान के साथ कई कर्मचारी, अधिकारी व सेना के लोगों ने आंध्रप्रदेश के बीजापुर, गोलकोण्डा व महाराष्ट्र के अहमदनगर से लेकर उत्तरिक के कुछ जिलों में इसका प्रचलन शुरू हुआ। इसके पश्चात कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा राजधानी को दिल्ली से देवगिरी या दौलताबाद ले जाना भी दूसरा प्रमुख कारण रहा। हुआ यह कि दिल्ली के आसपास के लोग दक्षिण भारत गए और उन पर मराठी, कन्नड़, तमिल, तेलगु, मलयालम आदि का प्रभाव पड़ा, और एक मिश्रित भाषा का विकास हुआ, जिसे दक्खिनी हिन्दी कहा गया।

इसके साथ ही दक्खिनी हिन्दी में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में साहित्य लेखन की शुरुआत की हुई जिसमें वली दकनी, बंदेनवाज, आदि कवियों के साथ निजामशाही शासन व मुहम्मद शाह अब्दाली द्वितीय प्रमुख हैं।

जिसे इश्क का तीर कारी लगे, उसे जिंदगी क्यूँ
न भारी लगे
× × × ×
वही कहे अगर वचपन, तो
रकीबों के दिल पर कटारी लगे
(वलीदकनी)

"सूरज यू है रंग असमानी मने
जैसे खिल्या फूल कमल पानी मने,"
आदि 'दक्खिनी' हिन्दी के स्वरूप को प्रदर्शित करती हुई पंक्तियाँ हैं।

दक्खिनी हिन्दी की भाषागत विशेषताओं पर चर्चा करें, तो सर्वप्रथम यह विदित है कि यह स्वतंत्र भाषा नहीं है बल्कि कई भाषाओं के मिश्रण से उत्पन्न हुई भाषा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसकी ~~विशेषताओं~~ में ऐकारान्तता का प्रयोग बहुतायत में मिलता है जैसे मने, लगे आदि। इसके अलावा उच्चारण में 'याँ' प्रत्यय का प्रयोग ज्यादातर हुआ है -
अंगाड़ियाँ लोटियाँ लड़कियाँ'

अक्षरों के स्थानपरिवर्तन उच्चारण के समय इसकी ~~विशेष~~ विशेषता है -

मतलब > मतबल
लखनऊ > नखलऊ

इसके अलावा क़, ख़, ग़, प़, फ़ आदि फारसी व्यंजनों का प्रयोग काफी मात्रा में हुआ है क्योंकि इस्लामी आक्रमण के कारण फारसी भाषा ~~इसी~~ का प्रभाव था।

कन्नड़, तेलगु, तमिल व मलयालम के ऎ, ऒ का प्रयोग किया जाता है। अगर शब्दावली की दृष्टि से देखा जाए तो फारसी शब्दों का प्रयोग, तद्भवीकरण व देशज शब्दों का प्रयोग किया गया। मराठी के 'ळ' ध्वनि का प्रयोग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

भी देखने को मिलता है।

- इसकी व्याकरणिक संरचना खड़ी बोली के ढाँचे पर आधारित है लेकिन कुछ बदलाव किये गए, जैसे सर्वनाम उन्ने, उस्ने, आदि व कारकों में भी परसर्ग बदल गये।

व इन सब विशेषताओं के कारण ही दक्खिनी हिन्दी का एक नया आयाम हुआ, जिसने न केवल हिन्दी भाषा के क्षेत्र को बढ़ाया बल्कि इसके संपर्क भाषा होने के संभावनाओं को भी गति दी। जिसका परिणाम स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान देखने को मिला।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रारंभिक हिंदी की व्याकरणिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रारंभिक हिन्दी ~~की~~ अवहट्ट ~~के~~ के अंतिम समय लगभग 11वीं शताब्दी से शुरू होती है जिसका प्रयोग अमीर खुसरो ने 'खालिकबारी' तथा पं. दामोदर ने 'उक्ति व्यक्ति प्रकरण' में किया।

भाषा की विकास प्रक्रिया में इसने अवहट्ट की ~~कई~~ विशेषताओं को धारण किया जिनमें ध्वनिगत, व्याकरणिक व शब्दगत विशेषताएँ शामिल है।

व्याकरणिक दृष्टि से प्रारंभिक हिन्दी की विशेषताएँ -

(क) अवहट्ट की तरह ~~[illegible]~~ केवल दो वचनों का प्रयोग (एकवचन व बहुवचन, द्विवचन का बहुवचन के रूप में।

(ख) दो लिंगों का प्रयोग पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुसंक लिंग को पुल्लिंग मानकर प्रयोग.

(ग) वाच्यों के रूप में कर्तृवाच्य व कर्मवाच्य का प्रयोग किया जाता था।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) ~~विशेषण~~ बनाने के लिए औकारान्तता का प्रयोग पीतवसन > पीरोवसन तथा प्रत्ययों का प्रयोग।

(ङ) कारकीय व्यवस्था में कर्म के साथ 'को', अपादान 'से' व अधिकरण में 'पर' का विकास हुआ।

(च) एकवचन से बहुवचन बनाने के लिए अन, न प्रत्ययों का प्रयोग व स्त्रीलिंग प्राय इकारान्त मिलते हैं।

(छ) सर्वनाम में मैं, तुम, हमारा, तुम्हारा आदि का विकास हुआ।

अतः इन सभी विशेषताओं के विकास ने खड़ी बोली के विकास की प्रक्रिया को शुरुआत दी, जिसमें अमीर खुसरो "पान क्यों सड़ा
घोड़ा क्यों अड़ा
फेरा न था।"
ने काव्य रचना की, तथा इसी प्रारंभिक हिन्दी में कुछ संशोधन

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व बदलाव पर आधुनिक हिन्दी 'खड़ी बोली' का विकास हुआ जिसने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन में सम्पर्क भाषा का काम कर, नवजागरण व राष्ट्रीय चेतना जैसे तत्वों को उभारा बल्कि भारतेन्दु युग व द्विवेदी युग के अंत तक साहित्य लेखन के क्षेत्र में भी अपना एकाधिकार जमा लिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में अवधी के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी पूर्वी हिन्दी की एक महत्वपूर्ण बोली है जिसका विकास अर्धमागधी प्राकृत से हुआ। इसका प्रयोग क्षेत्र लखनऊ, फैजाबाद, कानपुर व अयोध्या आदि में है।

मध्यकाल में भाषायी संक्रमण की स्थिति पैदा हुई क्योंकि इस्लाम के आगमन से संस्कृतियों की टकराहट हुई और इससे फारसी व अवधी में साहित्य लेखन वाद-विवाद की शुरुआत की।

क्योंकि उस समय के दौर में प्रेमाख्यान लिखने की परंपरा थी जैसे उर्वशी-पुरुरवा, माधव-मालती आदि, तो सूफीकवियों ने अवधी का प्रयोग प्रेमाख्यानक काव्यों को लिखने में किया।

मुल्ला दाऊद की 'चंदायन' या लोरिकहा इस दौर की प्रमुख कृति है-

"मुल्ला दाऊद सो चंदा गाई
जो पढ़ पढ़ै सो मुरझाई।।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी का दूसरा प्रखर विकास भक्ति आंदोलन के दौरान का है जिसमें न केवल कबीरदास ने बल्कि अन्य कवियों ने भी अवधी को तालिपलेख्यर की भाषा बनायी। और तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' की रचना अवधी में कर इसको सर्वव्यापि पाठ्य भाषा बनायी।

'तासव्वुफ़' वाली ~~विचार~~ फारसी शैलि ने इश्क हकीकी व इश्क मजाजी को अभिव्यक्त करने के लिए जिसमें लैलिका (खुदा) व प्रेमीक (बंदे) के रूप में व्यक्त किया जाता है। इसमें मालिक मुहम्मद जायसी की 'पद्मावत' का उदाहरण ~~अवश्य~~ अप्रतिम है क्योंकि यह अवधी भाषा का पहला महाकाव्य है जो मध्यकाल में रचा गया।

अवधी की मर्यादापूर्ण, गंभीर व लोकमंगल की धारणा वाली विशेषताएं कवियों व लेखकों को भाषी व काव्य भाषा के रूप में कोई दूसरा विकल्प नहीं मिलता।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अवधी में विरह का विशद वर्णन,
लोगों में एकसमानता की बात –
"परहित सरस धर्म न भाई
परपीड़ा सम नहिं अधिमाई।"
आदि से अवधी के विकास को गति मिली।
लेकिन इसकी कुछ सीमाओं जैसे मनोरंजनपरक भाव को व्यक्त करने की कमी, वात्सल्य व शृंगार की बिम्बात्मकता व प्रतीकात्मकता को बताने की कमी ने ब्रज भाषा को अवसर दे दिया और यह केवल सीमित क्षेत्र में ही प्रचलन में रह गयी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) 'पूर्वी हिंदी' और 'पश्चिमी हिंदी' के व्याकरणिक भिन्नता पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) रामस्वरूप चतुर्वेदी के साहित्येतिहास-लेखन की विशेषताएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रामस्वरूप चतुर्वेदी ने आ० शुक्ल के लक्ष्यवादी या विधेयवादी व आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के परंपरावादी ~~दृष्टिकोण~~ का समन्वय किया।

चूँकि इनकी विचारधारा समाजवाद से प्रभावित थी अतः प्रगतिवादी तत्व व प्रगतिशीलता इनके ~~*~~ लेखन में बहुतायत से मिलती है।

रामस्वरूप चतुर्वेदी ने साहित्य में उन लोगों को महत्व दिया जो हाशिये पर पहुँच चुके थे जैसे किसान, ~~मज़~~ मजदूर इत्यादि।

इसके अलावा कबीर की अक्खड़ता व भाषा को इन्होंने प्रबल समर्थन दिया व साहित्य में शामिल किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) मनोवैज्ञानिक कहानी का परिचय

हिन्दी की कहानी परंपरा में सामाजिक यथार्थ व मनोवैज्ञानिक दो धाराएँ की उपस्थिति दिखाई देती है।

मनोवैज्ञानिक कहानी की शुरुआत जयशंकर प्रसाद ने की जिसमें इन्होंने व्यक्ति के अंतर्मन, चिंतन-मनन, व्यक्ति की निजता आदि के बारे में कहानियाँ लिखी। उनकी कहानी 'आकाशदीप' अंतर्मन के द्वंद से परिपूर्ण व मणियों के मन के द्वंद दिखाई पड़ते हैं। 'पुरस्कार' कहानी भी ऐसी ही है।

इस परंपरा के विस्तार को गति जैनेन्द्र, इलाचंद्र आदि ने दिया और फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद के अनुसार प्रभाव से इसको आगे बढ़ाया।

मनोवैज्ञानिक कहानी को चरम स्तर पर 'अज्ञेय' ने पहुँचाया

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो अस्तित्ववादी व मनोविश्लेषणवादी विचारधारा से प्रभावित थे।
व्यक्ति के आन्तरिक मन के द्वन्द्व, आधुनिक भाव-बोध, यथार्थ, अकेलापन आदि को इन्होंने 'विपथगा', 'परंपरा' व 'जयदोल' आदि कहानियों के माध्यम से उभारा।

मोहन राकेश ने भी मनोवैज्ञानिक तल पर पहुँचकर जीवन यथार्थ को उभारा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा की भिन्नताएँ

संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा भक्तिकालीन ~~युग~~ युग की दो प्रमुख धाराएँ रही हैं। भक्ति आंदोलन से उपजी ये धाराएं भारत की ~~मिश्रित~~ समन्वित संस्कृति की ओर इंगित करती है।

मुख्य भिन्नताएँ

संतकाव्यधारा	सूफीकाव्यधारा
दर्शन : मुख्यत: अद्वैतवाद	'तसव्वुफ'
रूप : सगुण व निर्गुण	निर्गुण
भाषा : पंचमेल खिचड़ी	मुख्यत: अवधी
सामाजिक आडम्बरों धार्मिक अत्याचारों पर जोर	सामाजिक पक्ष लगभग अनुपस्थित
– ब्राह्मणवादी मानसिकता से विरोध.	'गंगी-जमुनी तहजबी' सामासिक संस्कृति.

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः दोनों काव्यधाराओं में पर्याप्त भिन्नताओं के बावजूद इन्होंने समन्वय के साथ, सामाजिक पुनरुत्थान किया जो कि आगे चलकर नवजागरण व सामाजिक आंदोलन का आधार बना।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) आंचलिक कहानी

आंचलिक कहानी किसी क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित होती है जिसकी भाषा भी लोकप्रचलित भाषा होती है।
इसमें उस अंचल के मनोभाव को चमा किया जाता है तथा सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था को उभारा जाता है।

हालांकि प्रेमचन्द ने कुछ आंचलिक कहानियां लिखी लेकिन कृष्णा सोबती ने इस धारा को मजबूती दी।
उन्होंने पंजाबी-मिश्रित भाषा का प्रयोग करके आंचलिक कहानियों को बढ़ावा दिया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ड़) इप्टा

इप्टा नाटकीय रंगमंच की एक संस्था है जो भारत के रंगमंच की संभावनाओं को बढ़ावा देती है।

मोहन राकेश के नाटक आधे-अधूरे, लहरों के राजहंस व जयशंकर प्रसाद के ऐतिहासिक नाटकों चंद्रगुप्त व स्कंदगुप्त की रंगमंचीयता को नए उपकरणों व अनुसंधानों से बढ़ावा देने का प्रयास कर रही है।

इसके द्वारा कई नाटकों का सफल मंचन किया गया है जिससे दर्शकों के माध्य नाट्य विधा के विकास की संभावना जीवंत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) हिंदी साहित्येतिहास-लेखन-परंपरा में आचार्य रामचंद्र शुक्ल का योगदान अप्रतिम है लेकिन उसकी कई सीमाएँ भी हैं। विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आ० रामचंद्र शुक्ल ने साहित्येतिहास-लेखन परंपरा में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

अपनी पुस्तक 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है जिसमें उन्होंने साहित्य सम्बन्धी दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है।

(i) किसी भी क्षेत्र का साहित्य वहाँ की जनता में प्रतिबिंबित चितवृत्तियों से होता है।

(ii) चित्तवृत्तियाँ राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है।

(iii) चित्तवृत्तियाँ बदलती है तो साहित्य भी बदलता है।

(iv) अतः साहित्यकारों का उद्देश्य मत

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होना चाहिए कि विभूतियाँ क्यों बदली व साहित्य को कैसे बदलना चाहिए।

इनकी इतिहास संबंधी दृष्टिकोण तेन की अवधारणा से प्रभावित था भी कि प्रत्यक्षवाद या विधेयवादी कहलाया जिसने वस्तुनिष्ठ आधार पर समीक्षा की। इसके अन्तर्गत जाति, वातावरण, व समय तीन प्रमुख अंग हैं।

आ० शुक्ल ने लेखकों की जीवनी लिखने की बजाय समीक्षा पर ज्यादा बल दिया।

इनका काल वर्गीकरण भी लगभग सही है

वीरगाथाकाल 1050 - 1350 ई.
भक्तिकाल 1350 - 1700 ई.
रीतिकाल 1700 - 1900 ई.
आधुनिककाल 1900 से अब तक

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

आ० शुक्ल ने साहित्य इतिहास लेखन की ~~[illegible]~~ वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शुरुआत की।

सीमाएं -

① विधेयवादी दृष्टिकोण के कारण, परंपरा पर ध्यान नहीं जबकि कबीर की अक्खड़ता, सिद्धों व नाथों का प्रभाव है।

② लेखकों की जीवनी पर कम बल के कारण साहित्य लेखन कम

③ सिद्ध साहित्य को धार्मिक होने के कारण साहित्य से बाहर मानना

④ काल वर्गीकरण भी परिपूर्ण नहीं।

⑤ आ० शुक्ल ने मनोरंजन व छोटे कवियों को साहित्य के किनारे पर कर दिया।

⑥ लोकमंगल की अवधारणा से ~~[illegible]~~

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सामाजिक पक्षों पर कम बल।

इन्हीं जवाब आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने परंपरावादी विचारधारा के समर्थक थे, ~~ने~~ उन्होंने इन कमियों में सुधार किया और एक-दूसरे के पूरक होकर नाटिरपर ~~निबन्ध~~ लेखन परंपरा को सुदृढ़ व समृद्ध बनाया।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) दलित-जीवन की अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिंदी कहानी पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दलित जीवन की अभिव्यक्ति दो प्रकार की कहानियों में मिलती है -

हिन्दी साहित्य के विकास की प्रक्रिया में जैसे. प्रेमचंद - उदयप्रकाश

दलित साहित्यकारों की 'स्वयंवेदना' पर आधारित कहानियों में।

प्रेमचंद की 'सद्गति' इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण क्योंकि, इसमें 'दुखी चमार' के माध्यम से समाज में व्याप्त 'बेगार व अस्पृश्यता' को दर्शाया गया है। इतना ही नहीं उन्होंने अमानवीय व्यवहार के शिकार दलितों की स्थिति को भी उभारा है,

"मेरी ही गलती थी कि ब्राह्मण के घर में पैर रखा।" (दुखी चमार)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसके अलावा प्रेमचंद ने दलित भेदभाव ~~[illegible]~~ के खिलाफ उभरती हुई क्रांति चेतना को भी ~~[illegible]~~ दर्शाया ~~[illegible]~~ है जो कि आगे चलकर दलित साहित्यकारों का हिस्सा बनी।

उदयप्रकाश ने कहानी 'टेपचू' में भी दलित समस्याओं को उभारा है। जिसमें 'टेपचू' इस व्यवस्था का शिकार होता है "मरेगा नहीं, जिन्न है साला" इस कहानी की व्यंग्यात्मक पंक्ति है। जिसके माध्यम से दलितों पर हो रहे शोषण को दर्शाया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेम यथार्थवादी वाली कहानी 'कफन' व 'दूध का दाम' में इस समस्या का और मार्मिक चित्रण मिलता है। 'मंगल' भी इसी व्यवस्था का शिकार होता है और 'दूध के दाम के बदले में' चिराई खाता है व भूखा पड़ा रहता है।

इसी परंपरा में आगे चलकर दलित आंदोलन को आधार दिया। विडंबना है कि इतने लेखन के पश्चात भी आज के समय में यह व्यवस्था सुधरने का नाम नहीं ले रही, संविधान भी राजनैतिक इच्छाशक्ति के सामने कमजोर पड़ता दिखाई दे रहा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पारसी रंगमंच की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पारसी रंगमंच ने हिन्दी में भारतेन्दु युग में आगमन किया। उनके नाटक 'भारत-दुर्दशा' में इसकी छटा झलकती है। जैसे श्मशान का दृश्य, कुत्ते-हड्डियां इत्यादि।

यवनिका का प्रयोग पारसी रंगमंच की ही देन है। बाद में विभिन्न प्रकार की लाइट्स, व लटके-झटके नाटकीय तनाव को मनोरंजनपरक बनाने के लिए इसमें किया जाता है।

मोहन राकेश के नाटकों के रंगमंच के आते-आते इस रंगमंच की आवश्यकता कम होती गई और भारतीय रंगमंच का विकास भी कि प्राकृतिक तरीके से नवि उपकरणों के माध्यम से हुआ।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेषताएं —

(1) ध्वनिका का प्रयोग

(2) जानवरों का प्रयोग जैसे कुत्ते, बिल्ली, सियार

(3) डरावना वातावरण को लाना - श्मशान, बीहड़ इत्यादि।

(4) रंगमंच पर रंग बिरंगी संकेत व पात्रों को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation